2

आर्थिक क्रियाकलापों का वर्गीकरण
[CLASSIFICATION OF ECONOMIC ACTIVITIES]

मानव के वह क्रियाकलाप, जिनसे उसे आय प्राप्त होती है, को मानव की क्रियाएँ या आर्थिक क्रियाएँ कहा जाता है। मानव अपने जीविकोपार्जन के लिए वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित कर विभिन्न आर्थिक क्रियाएँ करता है, इन सभी प्रकार के आर्थिक क्रियाओं को मानवीय व्यवसाय कहा जाता है। आर्थिक भूगोल में मानव की आर्थिक क्रियाओं का सर्वोपरि महत्व है। मानव की आर्थिक क्रियाओं के अन्तर्गत प्राकृतिक वस्तुओं का एकत्रण, आखेट, पशुचारण, मत्स्य आहरण, लकड़ी काटना, खनन, कृषि, उद्योग, परिवहन, वाणिज्य एवं व्यापार, चिकित्सा, शिक्षा आदि सेवाएँ सम्मिलित की जाती हैं।

मानव द्वारा की जाने वाली आर्थिक क्रियाओं के निम्नलिखित चार वर्ग होते हैं—

1. प्राथमिक व्यवसाय (Primary Occupation)
2. द्वितीयक व्यवसाय (Secondary Occupation)
3. तृतीयक व्यवसाय (Tertiary Occupation)

1. प्राथमिक व्यवसाय
(PRIMARY OCCUPATION)

प्राथमिक व्यवसायों में प्रकृति प्रदत्त संसाधनों का सीधा उपयोग किया जाता है। मानव के प्रारम्भिक आर्थिक क्रियाकलापों का प्रारम्भ प्राथमिक क्रियाकलापों के रूप में हुआ। मानव अपनी संस्कृति की प्रारम्भिक अवस्था में अपनी सीमित आवश्यकताओं की आपूर्ति के लिए यत्र-तत्र भ्रमण करता हुआ पूरा करता था। इन व्यवसायों में भोजन व वस्तुओं का संग्रह या एकत्रीकरण तथा वन्य जीवों का शिकार प्रमुख था। बाद में संस्कृति स्तर में सुधार होने पर मानव द्वारा पशुपालन, खनन तथा जीवन निर्वाहक कृषि जैसे प्राथमिक व्यवसायों को अपनाया गया। वर्तमान में प्राथमिक व्यवसाय के अन्तर्गत निम्नलिखित चार व्यवसाय प्रमुख हैं—

1. आखेट व भोजन संग्रह, 2. पशुचारण, 3. कृषि, 4. खनन।

1. आखेट एवं भोजन संग्रह (Hunting and Food Gathering)

आखेट तथा भोजन संग्रह मानव द्वारा कीं जाने वाली ज्ञात प्राचीनतम आर्थिक क्रियाएँ हैं।

मानव सभ्यता के आरम्भिक युग में आदिमकालीन मानव अपने जीवन निर्वाह के लिए अपने समीपवर्ती वातावरण पर निर्भर रहता था। उसका जीवन निर्वाह दो कार्यों द्वारा होता था—(i) पशुओं का आखेट करके, (ii) अपने समीपवर्ती जंगलों से खाने योग्य कंद-मूल एवं जंगली पौधे आदि एकत्रित करके।

आदिमकालीन मानवीय समाज कठोर जलवायु दशाओं में अपने भरणपोषण के लिए पूर्णत: पशुओं पर निर्भर था। अति शीत तथा अति गर्म प्रदेशों में निवास करने वाले लोग जंगली पशुओं तथा जलीय क्षेत्रों से मछलियों का शिकार कर अपनी उदरपूर्ति करते थे। वर्तमान में तकनीकी विकास के चलते मछली पकड़ने के कार्य का आधुनिकीकरण हो गया है, लेकिन आज भी विश्व के अनेक तटीय क्षेत्रों में रहने वाले लोग परम्परागत शैली से मछली पकड़ने का कार्य करते हैं। प्राचीन समय में जंगली जीव-जन्तुओं का शिकार करने के लिए शिकारी पत्थर या लकड़ी से निर्मित, औजारों तथा तीरों का उपयोग करते थे, जिससे उनके द्वारा मारे जाने वाले जंगली जीवों की संख्या सीमित रहती थी।

आखेट व भोजन संग्रह व्यवसाय में बहुत कम व्यक्तियों की आवश्यकता होती है, साथ ही अन्य किसी आर्थिक क्रिया की अपेक्षा अधिक क्षेत्र की आवश्यकता होती है। जीवनयापन न्यूनतम आधार पर सम्भव है, फिर भी आदिकाल से ही मनुष्य अपने भोजन, वस्त्र, सुरक्षा और आवश्यकताओं के लिए वस्तुओं का संचय और

अपने वातावरण में प्राप्त पशुओं का शिकार करता रहा है। इन उद्यमों में वह पूरी तरह अपने वातावरण से प्रभावित एवं नियन्त्रित रहा है। आदि मानव जंगलों में रहता था तथा जंगलों में मिलने वाले जानवरों का शिकार करता था। वस्तुओं के संचय एवं शिकार के लिए इन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करना पड़ता था।

प्राचीन ढंग से भोजन संग्रह तथा शिकार करने का व्यवसाय वर्तमान में निम्नलिखित दो क्षेत्रों में किया जाता है—

(i) **निम्न अक्षांशीय क्षेत्रों में** अमेजन बेसिन (ब्राजील, पेरू, इक्वेडोर एवं वेनेजुएला में); उष्ण कटिबन्धीय अफ्रीका में कांगो बेसिन, ऑस्ट्रेलिया के उत्तरी तटीय भाग, न्यूगिनी और कालीमन्तन के भीतरी भाग तथा दक्षिण-पूर्वी एशिया के आन्तरिक क्षेत्र सम्मिलित हैं।

निम्न अक्षांशीय क्षेत्रों में उष्ण कटिबन्ध में अनेक प्रकार के पेड़-पौधों की छालें, तने व फल, जड़ें, पत्तियों के अलावा लकड़ियाँ, माँस, मछलियाँ व अण्डे आदि प्राप्त किये जाते हैं इक्वेडोर के **औका** (Auca), उत्तरी कालाहारी के **बुशमैन** (Bushman), कांगो के **पिग्मी** (Pygmies) और न्यूगिनी के **पापुआ** (Papuans) अनेक प्रकार के कंदमूल-फल एकत्र करते हैं तथा पशुओं और मछलियों का फंदों से शिकार करते हैं।

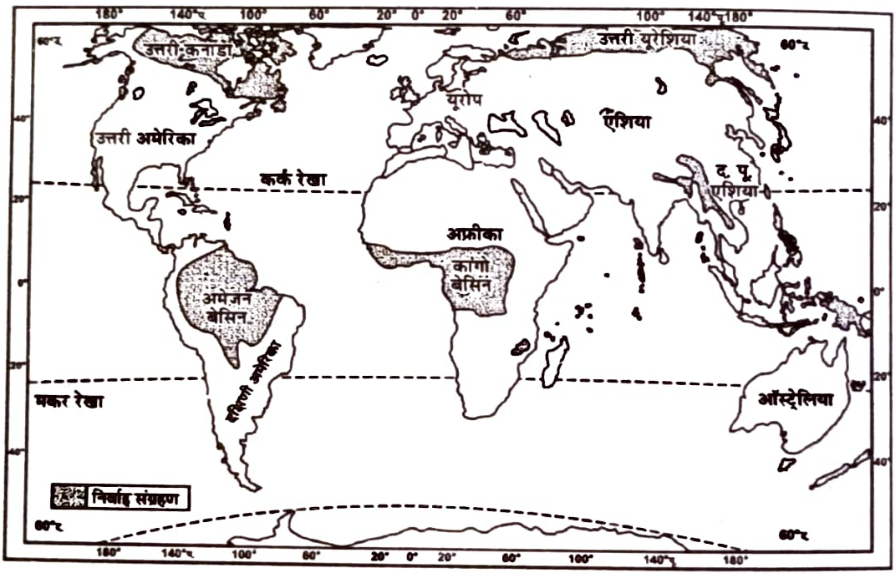

चित्र 2.1 : विश्व में जीवन निर्वाहन संग्रहण के क्षेत्र

(ii) **उच्च अंक्षाशीय क्षेत्रों** में ऐसे क्षेत्र उत्तरी कनाड़ा, उत्तरी यूरोप तथा उत्तरी एशियाई क्षेत्रों में मिलते हैं। उच्च अक्षांशीय क्षेत्रों में भोजन संचय मुख्य रूप से वहाँ मिलने वाले पशुओं के शिकार के लिए किया जाता है। स्थल पर कैरीबो व कस्तूरी बैल; जल से सील, वालरस, ह्वेल, सालमन आदि मछलियाँ और वायु में उड़ने वाले पक्षियों से अण्डे प्राप्त किये जाते हैं। उत्तरी अमेरिका के एस्किमो लोग इनका शिकार करने में बड़े कुशल हैं। इसी प्रकार अमेरिका में रेड इण्डियन हिरणों का और साइबेरिया के **युकागिर** तथा दक्षिण चिली के लोग सामुद्रिक एवं स्थलीय पशु-पक्षियों का शिकार कर उनसे अनेक वस्तुएँ प्राप्त करते हैं।

वर्तमान समय में भी विश्व के अनेक भागों में अनेक जातियों द्वारा विशिष्ट रूप से शिकार एवं वन-उत्पादों का संचय किया जाता है। इनके शिकार करने के ढंग उन्नत और औजार विशेषता लिए होते हैं। ये लोग किसी एक ही किस्म के जीवों का शिकार करने में रुचि रखते हैं। जैसे—स्टैपी और प्रेयरी के मैदानों में बिसन (Bison) भैंसों का शिकार करने वाले अमेरिकी; कनाडा और अलास्का के कैरीबो शिकारी; आर्कटिक के सील के शिकारी तथा टैगा के समूरदार पशुओं के शिकारी।

वर्तमान समय में विश्व स्तर पर भोजन संग्रहण का अधिक महत्व नहीं रह गया है, क्योंकि इन क्रियाओं के द्वारा प्राप्त उत्पाद विश्व बाजार से प्रतिस्पर्द्धा करने में असमर्थ हैं। आज बाजार में अनेक प्रकार की उत्तम किस्म एवं कम कीमत वाली कृत्रिम वस्तुएँ उपलब्ध हैं, जिन्होंने उष्ण कटिबन्धीय वन क्षेत्रों के भोजन संग्रह करने वाले समूहों के उत्पादों का स्थान ले लिया है।

भोजन संग्रह व्यवसाय का व्यापारीकरण—उच्च अक्षांशीय तथा निम्न अक्षांशीय क्षेत्रों के कुछ भागों में अधिक पूँजी तथा उच्च तकनीक के माध्यम से भोजन संग्रह व्यवसाय का व्यापारीकरण कर दिया गया है। इसके अन्तर्गत स्थानीय लोगों की सहायता से कीमती वृक्षों की पत्तियाँ, छाल एवं औषधीय पौधों का संग्रह कराया जाता है तथा इन्हें संशोधित कर अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में विक्रय कर दिया जाता है। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित संगृहीत वनोत्पादों का आधुनिक मशीनों की सहायता से शोधन कर विभिन्न उपयोगी उत्पादन प्राप्त किए जाते हैं।

संगृहीत वस्तुएँ	शोधित उत्पाद
(i) पौधों की छाल	कुनैन तथा कार्क
(ii) पौधों की पत्तियाँ	पेय पदार्थ, दवाइयाँ तथा कान्तिवर्द्धक वस्तुएँ
(iii) पौधों के रेशे	वस्त्रों का धागा
(iv) पौधों के दृढ़फल	भोजन व तेल
(v) पौधों का तना	रबड़, बलाटा, गोंद व राल।

भोजन संग्रह व आखेट व्यवसाय की प्रमुख विशेषताएँ—(i) भोजन संग्रह व आखेट नामक आर्थिक क्रियाकलापों को आदिमकालीन मानव द्वारा कठोर जलवायु दशाएँ रखने वाले क्षेत्रों में किया जाता है।

(ii) यह कार्य विश्व के विभिन्न भागों में विभिन्न स्तरों व विभिन्न रूपों में किया जाता है।

(iii) यह व्यवसाय भोजन, वस्त्र, शरण जैसी अत्यन्त महत्वपूर्ण प्राथमिक आवश्यकताओं की आपूर्ति के उद्देश्य से किया जाता है।

(iv) इस व्यवसाय में बहुत कम पूँजी, निम्नस्तरीय तकनीक तथा अधिक मानवीय श्रम की आवश्यकता होती है।

(v) प्रति व्यक्ति उत्पादकता कम होती है।